International Journal of Engineering Research & Management Technology
ISSN: 2348-4039
July-August 2023 Volume-10, Issue-4
Email: editor@ijermt.org www.ijermt.org

हिंदी साहित्य में भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीय भावना की झलक

दीक्षा राय
शोध छात्रा , हिंदी विभाग,विश्व भारती ,पश्चिम बंगाल

मुक्तेश्वर नाथ तिवारी
प्रोफेसर - हिंदी विभाग ,विश्व भारती ,पश्चिम बंगाल

सार

भारत बहुसांस्कृतिक, बहुभाषिक देश है। यहाँ विपुल मात्रा में साहित्य रचा जाता है हमारा साहित्य हमारी बहुसंस्कृति का ही धोतक है । विशेष रूप से हिंदी साहित्य हमारी बहुसंस्कृति के साथ देश के प्रतिनिधि - साहित्य के रूप में उपस्थित हुआ है। विविधताओं का देश होने के बावजूद, भारतीय जीवन के इंद्रधनुपी वैविध्य के बावजूद भारत वर्ष सांस्कृतिक मूल्यों और सभ्यता की दृष्टि से ऐतिहासिक महत्व रखता है । भारतीय संस्कृति का मूल वसुधा को एक कुटुंब मानते है। इस भावना ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के माध्यम से भारत में सामाजिक समानता की भावना को जगा कर देश के प्रत्येक निवासी को एक सूत्र में बाँधा है। जिससे आज हमारा देश एक विकसित देश बनकर अन्तराष्ट्रीय मंच पर सम्मान पा रहा है।

मुख्य शब्दः *भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय भावना*

परिचय

सभ्यता का आन्तरिक प्रभाव संस्कृति है, संस्कृति मनुष्य के भूत वर्तमान और भावी जीवन का सर्वांग निरूपण करती है। हमारे जीवन शैली का अभिन्न अंग है संस्कृति। सभ्यता समाज की बाह्य व्यवस्थाओं का नाम है तो संस्कृति व्यक्ति के विकाश का । भाषा संस्कृति की वाहिका है यही कारण है कि साहित्य में संस्कृति की गहरी झलक मिलती है। मैडलवान के कथन का सार भी यह है कि 'प्रत्येक संस्कृति का सार तत्व उसकी भाषा में अभिव्यक्ति पा सकता । भापा के बिना यदि संस्कृति सर्मथहीन है तो संस्कृति के आभाव में भापा अंधी । संस्कृति के पूरक तत्व भापा के साथ-साथ देश के रहन-सहन, आचार-विचार, रीति-रिवाज, ज्ञान-विज्ञान, परम्परागत अनुभव, कला-प्रेम, जीवन यापन के ढ़ंग और रूची आदि का बोध होती है। भारतीय संस्कृति की सबसे विशिष्टता यह है कि इसकी विचार धारा में भौतिक और आध्यात्मिक दोनों चिन्तन का समावेश है । भारतीय संस्कृति विश्व की एक प्राचीनतम संस्कृति है जिसकी आभा विभिन्न संघर्षों से गुजरने तथा हजारों वर्षों की यात्रा करने के बावजूद धूमिल नहीं हुई है। मुहम्मद इकबाल की यह युक्तियाँ भारतीय संस्कृति के लिए सार्थक प्रतित होती है:- कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी । सदियों रहा है दुश्मन दौरें जमां हमारा।।

भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र उसकी उदारता, सहिष्णुता और समस्त वसुधा को एक कुटुंब मानने में है। भारतीय संस्कृति गिरि शिखरों की भाँति उदात्त, गंगा की भाँति निरंतर प्रवहमान, समुद्र की तरह विशाल है। वह विधा - अविधा, श्रेय-प्रेय, अभ्युदय, निःश्रेयस, धावा - पृथ्वी सभी को आत्मसात करती हुई विश्व को ज्योतिर्मय करती आ रही है। ऋग्वेद का यह आभार संदेश "आ नो भद्रा, कृत्वो यंतु विश्वतः " अर्थात प्रत्येक दिशा से शुभ एवं सुंदर विचार हमें प्राप्त हों, यही इसकी महानता का प्रमाण है। हिंदी भाषा और साहित्य का समग्र इतिहास हमारी समन्वित संस्कृति का इतिहास है। हमारे देश में सांस्कृतिक समन्वय के समय-समय पर जो प्रयास होते रहे, उनमें हिंदी भाषा का विशेष योगदान रहा है । संस्कृति की वाहिका हिन्दी भापा ने ही 'राष्ट्रवाद' को भारतीय संस्कृति की एक महत्वपुर्ण विशेषता बना कर अभिव्यक्ति दी ।

राष्ट्रवाद शब्द 'राष्ट्रीयता' को अपने में समाहित किये हुए है। राष्ट्रीयता देश-प्रेम का यह प्रबल भावना है जो देश हित के लिए प्राणों का उत्सर्ग स्वेच्छा से करने का भाव हृदय में जागृत करती है । राष्ट्रीयता को परिभाषित करते हुए अमरकान्त लिखते है "राष्ट्रीयता उस भावना विशेष का नाम है, जिसके कारण कोई व्यक्ति या समुदाय पारस्परिक एकता की भावना का अनुभव करता है । वह श्रद्धा और निष्ठा पर आधारित एक ऐसा आदर्श है, जिसका केन्द्र राष्ट्र होता है, वह एक ऐसी मनोदशा है जिससे व्यक्ति अपनी राष्ट्रीयता एवं राज्य के प्रति उच्चतर करके अपने धन और मान का बलिदान करके कमर कस के उठो, देखा-देखी थोड़ी दिनों में सब हो जाएगा। जब तक सौ दो सौ आदमी बदनाम न होगे, जात से बाहर न निकाले जायेंगे, दरिद्र नहीं होगें, कैद न होगे, वरंच जान से न मारे जायेने तब तक कोई देश नहीं सुधरेगा । भक्ति-भावना का अनुभव करता है।"" संस्कृति और राष्ट्रवाद के मिलन का कार्य साहित्य द्वारा ही संभव हो पाया है। "हिन्दी भाषा और साहित्य का समग्र इतिहास हमारी समन्वित संस्कृति का इतिहास है।"" हिन्दी साहित्य में संस्कृति राष्ट्रवाद के मत को आरंभिक काल में सिध्दों, जैनियों, नाथों, संतों और सूफियों ने दिया । विभिन्न कालो में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद अपना स्वरूप किस-किस तरह से बदलता हुआ आगे बढ़ा इसका ज्ञान हिन्दी साहित्य का इतिहास देता है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का स्वरूप विभिन्न कालो में भिन्न-भिन्न रहा परन्तु मूल भाषा वही रही । हिन्दी साहित्य में सांस्कृतिक राष्ट्रीयता के मुख्यत दो रूप मिलते है, एक तो विदेशी मुस्लिम आक्रमणकारियों और उनके वंपजों के अत्याचार के विरूद्ध और दूसरा ब्रिटिश शासन की प्रतिक्रिया के रूप में। हमारे प्राचीन साहित्य आदिकाल से रीतिकाल तक पहला रूप उपलब्ध होता है जबकि आधुनिक साहित्य में दूसरा ।

"संस्कृति" शब्द की रचना "सम्" उपसर्ग "कृ" धातु तथा प्रत्यय से हुई है। अतः संस्कृति का अर्थ हैं वह दशा अथवा अवस्था जिसका संस्कार अथवा परिष्कार कर दिया गया है। 51 संस्कार तथा संस्कृति प्रायः समानार्थी वाचक है। डॉ राम खेलावन पाण्डेयजी ने संस्कृति का अर्थ बताया है "अलंकृत सम्यक कृति अथवा चेष्टा " हिंदी में प्रचलित "संस्कृति" शब्द अंग्रेजी के "कल्चर" शब्द का पर्यायी है, "कल्चर" का विशुध्द पर्यायवाची वैदिक शब्द है कृष्टि । कृष्टि से तात्पर्य कृषि कर्म है। समस्त मानव कृतियाँ जिन्हें मानव ने सुधारकर नवीन रूप दिया है अथवा संस्कार करके उत्पन्न की है, संस्कृति के अंतर्गत मानी जाएगी।

"संस्कृति" शब्द समाज एवं व्यक्ति और बौध्दिक गतिविधियों का परिचय देता है। विभिन्न भारतीय तथा पाश्चात्य विचारकों ने संस्कृति के विषय में अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये है पंडित जवाहरलाल नेहरूजी ने संस्कृति की परिभाषा की है, "संस्कृति का अर्थ मनुष्य का भीतरी विकास और उसकी नैतिक उन्नति है, एक दूसरे के साथ सद्व्यवहार है और दूसरे को समझने की शक्ति है। काका कालेलकरजी ने भी संस्कृति की परिभाषा की है, "हजारो तालों वर्षों के पुरुषार्थ से मनुष्य जाति ने जो कुछ भी पाया है, वही उसकी संस्कृति है। डॉ. हरिश्चंद्र वर्माजी लिखते है कि, "संस्कृति उन उदात्त विचारों और पवित्र कार्यो की शृंखला को कहते हैं जो किसी देश या जाति के जीवन को गति प्रदान करती है। डॉ. देवराजजी के मतानुसार, "संस्कृति जीवन के महत्वपूर्ण एवं सार्थक रूपों की आत्मचेतना है।" पाश्चात्य विचारक किबाल यंगजी ने भी संस्कृति की परिभाषा की है, "संस्कृति शब्द न्यूनाधिक रूप में उन आदतों, विचारों, अभिवृत्तियों और मूल्यों के उन संगठित जोर सदृढ प्रतिमानों की ओर संकेत करता है, जिन्हें एक नवजात शिशु अपने से बड़े लोगों अथवा स्वयं बड़े होने पर अन्य व्यक्तियों से प्राप्त करता है। हर्स कोवित्सजी का कथन है, "संस्कृति मानव व्यवहार का सीखा हुआ संस्कृति से ही मानव जीवन में सत्य, अहिंसा, प्रेम, परोपकार, उदारता,, निरभिमान एवं सहानुभूति आदि गुणों का विकास होता है, जिससे मानव स्वयं उन्नति के पथ पर अग्रसर होकर समाज को भी उन्नत कर सकता है। द्वारा ही मानव अपने अतीत के गौरव और गरिमा को अक्षुण्ण रख संस्कृति के सकता है।

संस्कृति और साहित्य :-

संस्कृति और साहित्य में अविच्छिन्न और अटूट संबंध है। संस्कृति के समान साहित्य भी समूचे मानव जीवन में परिव्याप्त है। साहित्यकार के व्यक्तित्व में उस संस्कृति की विशेषताएँ गुंथी हुई होती है। प्रत्येक देश का साहित्य तत्कालीन संस्कृति को प्रभावित कर उसे विकसित करता है। साहित्यकार अपने देश और काल की संस्कृति से प्रभावित होकर अपने ग्रंथ की रचना करता है। अतः साहित्य को संस्कृति की लिखित अभिव्यक्ति माना गया है, जो एक पीढी से दूसरी पीढी को अनायास प्राप्त होती रहती है।

साहित्य और संस्कृति दोनों का लक्ष्य जीवन को अधिक सुन्दर और उदात्त बनाना है। जिस देश का साहित्य जितना महान होता है, उस देश की संस्कृति भी उतनी महान होती है। साहित्य संस्कृति की लिखित अभिव्यक्ति है और संस्कृति साहित्य की आन्तरिक अमूर्त प्रेरणा दायिनी शक्ति साहित्य संस्कृति का संवाहक भी है और संबर्द्धक सम्पोषक भी।

उद्देश्य

1. हिंदी साहित्य हमारी बहुसंस्कृति के साथ देश के प्रतिनिधि - साहित्य के रूप में उपस्थित हुआ है।
2. साहित्य में संस्कृति की गहरी झलक मिलती है।

भारतीय संस्कृति का क्रमिक विकास :-

संस्कृति कोई स्थिर वस्तु नहीं संस्कृति युगानुसार परिवर्तनों को आत्मसात करती है, वह सतत विकासमान है। हुई अबाध गति से प्रवहमान

संस्कृतियों में से एक है। भारतीय भारतीय संस्कृति का क्रमिक विकास जीता जागता इतिहास है । आर्या, धारा है। भारतीय संस्कृति संसार की प्राचीनतम संस्कृति मानव की अनगिनत जातियों की देन है। उसके लगभग पांच-छः हजार वर्षों के जीवन का बौध्दों, जैनों, मुसलमानों और अंग्रेजों ने भारतीय संस्कृति को अत्याधिक प्रभावित किया है। सिन्धु घाटी की संस्कृति से आज तक भारतीय संस्कृति के क्रमिक विकास को हम निम्नलिखित प्रमुख भागों में विभक्त कर सकते हैं।

सिन्धु घाटी की संस्कृति

भारतवर्ष के इतिहास में सिन्धु घाटी की सभ्यता एवं संस्कृति सबसे अधिक प्राचीन है। वह नागरी सभ्यता के रूप में विश्व विख्यात है। उसका काल आज से पांच हजार वर्ष पूर्व माना गया है। हरप्पा, मोहेन्जोदडों और नाल में इस सभ्यता के कुछ अवशेष प्राप्त हुए हैं। इस संस्कृति की सर्व प्रमुख विशेषता यहाँ के नगरों का रचना कौशल ही था। स्वास्थ की दृष्टि से नगर में विभिन्न बातों का ध्यान रखा जाता था। यहाँ मार्ग और नालियाँ सुन्दर होती थी। इसकाल के निवासियों का सामाजिक जीवन बहुत सुखी ओर उन्नत था । यहाँ के लोगों का धार्मिक जीवन अपना विशेष महत्व रखता है। यहाँ के धार्मिक संस्कारों का विकसित रूप ही हिंदू संस्कृति में पाया जाता है।

वैदिक हिंदू संस्कृति :-

वैदिक संस्कृति का मूलाधार वेद साहित्य ही है। वेद हमारे प्राचीनतम धर्म ग्रंथ हैं तथा हिंदू धर्म के प्राण हैं। वेद की रक्षा सहस्त्रों वर्षो तक ओत्र परम्परा से हुई जतः वेद को "श्रुति" भी कहा जाता है। चार वेद ऋग्वेद संहिता, यजुर्वेद संहिता, समावेद संहिता और अथर्ववेद संहिता, उनके चार प्रमुख जंग संहिताएँ, ब्राहमण, आरण्यक और उपनिषद साहित्य वेद साहित्य कहलाता है। आर्य प्रणीत वेदों में जो विशाल समृध्द ज्ञान निहित है उसके आधार पर ही हम तत्कालीन संस्कृति को जो लगभग पांच हजार वर्ष की विरासत जान सकते हैं। वैदिक संस्कृति में सामाजिक व्यवस्था का मुख्य आधार परिवार था। कृषि, पशुपालन, व्यापार, शिकार, शस्त्र निर्माण तथा मछली पकड़ना आदि उपजीविता के प्रमुख साधन थे। भोजन में शाकाहार एवं मांसाहार दोनों प्रचलित थे। साथ ही वैदिक संस्कृति धर्म, दर्शन, समाज शास्त्र, राजनीति, अर्थशास्त्र, साहित्य, कला, विज्ञान आदि क्षेत्रों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

जैन और बौध्द धर्म प्रणीत संस्कृति :-

ईसा पूर्व छटी शताब्दी विश्व की एक महत्वपूर्ण शताब्दी है, समय की माँग के अनुसार सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक क्रांति की उद्गाता है। भारतीय संस्कृति को जैन और बौध्द धर्म ने तथा इनमें विशेष रूप से बौध्द धर्म ने अत्याधिक प्रभावित किया हैं। जेने धर्म के प्रवर्तक हैं भगवान वर्धमान महावीर और बौध्द धर्म के प्रवर्तक है गोतम बुध्द । जैन धर्म भारत का पुरातन धर्म है। पार्श्वनाथ के पश्चात् जैन धर्म के अंतिम और चौबीसवे तीर्थंकार वर्धमान महावीर हैं। आप जैन धर्म के संस्थापक नहीं हैं। आपने जैने धर्म का पुनरुध्दार कर समाज सुधार का प्रयास किया है।

आदिकाल में रासो ग्रथो में राष्ट्रीयता का व्यापक भाव सर्वत्र उपलब्ध नहीं होती रासो काव्यो के रचयिता राजपूती गौरव से अधिक ऊँचा नहीं उठ पाते। उनकी दृष्टि उतनी अधिक संकुचित थी कि पृथ्वीराज और गौरी के संघर्ष को भी जातीय या राष्ट्रीय संघर्ष के रूप में देख पाते। हेमचन्द के काव्य में सांस्कृतिक राष्ट्रीयता की झलक इस पंक्तियों में परिलक्षित हुई है:-

भल्ला हुआ जु मारिया बहिणि म्हारा केंतु । लज्जोज तु वयस्सि अहु जे भग्गा घर एंतु । । पूर्व मध्यकल में भक्ति काव्य में भी हमें सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का दर्शन होता है। सन्त (संत) साहित्य के सामाजिक एकता की भावना में राष्ट्रीयता व्यक्ति होती है ।

उत्तर मध्यकाल में राजस्थानी कवियों के काव्य के माध्यम से भी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद जातिय गौरव से अनुप्राणित है उस युग से समस्त हिन्दू गौरव के प्रतिनिधि एंव प्रतिक महाराणा प्रताप थे, महाराणा प्रताप के यशोगान को राष्ट्रीयता से ओत-पोत न माने किन्तु इसमे उस जातीय गौरव की व्यजना अवश्य मिलती है। भूषण ने शिवाजी और छत्रशाल जैसे वीरों का जिस उत्साह के साथ वर्णन किया है वह हिन्दू जाति के सांस्कृतिक राष्ट्रीयता कि ही एक झलक प्रस्तुत करती है।

आधुनिक साहित्य मे सांस्कृतिक राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति भारतेन्दु हरिशचन्द द्वारा हुई है "राष्ट्रीय चेतना को पहले पहल भारतेन्दु हरिशचन्द ने पहचाना और हिन्दी गद्य के माध्यम से उसे अभिव्यक्ति भी दी" भारतेन्दु जी अपने देशवासियों के अज्ञान, सर्कीणता आदि की धोर भर्त्सना करते हुए, भारतीयों को अपनी शक्ति को पुनः जागृत करने का प्रयास करते है। वे लिखते है– "जो लोग अपने को देश हितैशी लगते हो वह अपने सुख का होम भारतेन्दुयुगीन कवियों ने भारतीय जनमानस मे देशप्रेम की अलख जलाई, क्षेत्रीयता से ऊपर उठकर वे सम्पूर्ण राष्ट्र की नब्ज को टटोलने लगे। भारतेन्दु की 'विजयनी विजय वैजयन्ती, प्रेमधन की "आनन्द अरूणोदय", प्रताप नारायण मिश्र की 'महापर्व' और 'नया संवत्', राधाकृष्ण दास की भारत बारहमासा विनय शोपक कविताएँ देशप्रेम था देशभक्ति की प्रेरणा से युक्त है प्रेमधन ने 'हार्दिक हपादर्श कविता में इस स्वार्थपूर्ण शासन प्रकिया के लिए थी ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दोपी ठहराया है। राधाचरण गोस्वामी की कविता 'हमारो उत्तम भारत देश एंव राधाकृष्ण दास की कविता

'भारत बारहमासा' आदि कविताएँ देश-प्रेम से ओत-प्रोत है। भारतेन्दु जी की कविता का एक उदाहरण जिससे अंग्रेजों द्वारा किए जा रहे शोपण का चित्र प्रस्तुत है:-

द्विवेदीयुगीन कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से जनमानस के बीच सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की लहर चलाई, स्वतंत्रता के प्रति जनमानस में चेतना का संचार किया, इस युग के रचनाकारों का राष्ट्रीय प्रेम भारतेन्दु युग के तरह सामयिक रूदन से नहीं जुड़ा रहा, बल्कि समस्याओं के कारणों पर विचार करने के साथ-साथ उनके लिये समाधान ढूढ़ने तक जुड़ा है। द्विवेदी युग के अनेक कवियों ने राष्ट्रीयता की भावना व्यंजित की है, जिनमें मैथलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान और सोहनलाल द्विवेदी उल्लेखनीय है। गुप्त जी की राष्ट्रीयता का मार्मिक रूप भारत-भारती में दृष्टिगोजर होता है

भारतवर्ष' में संस्कृति, सभ्यता, शौर्व, दान, धर्म सभी दृष्टियों से विश्व का गुरू कहा है। इसी गौरव के गाकर कवि ने देशवासियों मे देश-प्रेम की भावना भरने का प्रयास किया है:-

प्रगतिवादी वादी कवियों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद उनके साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित है रामधारी सिंह दिनकर के 'रोटी और 'स्वाधीनता में वे स्वतंत्रता प्रेमियों के गुणों और आदर्शों पर प्रकाश डाला है:- स्वतंत्रता गर्व उनका, जो नर फाँकों से प्राण गँवाते है पर। नहीं बेच मन का प्रकाश रोटी का मोल चुकाते है ।। स्वतंत्रता गर्व उनका जिन पर संकट की धात न चलती है। तूफानों में जिनकी मशाल कुछ और तेज हो जलती है।

राष्ट्रीयता का स्वरूप तथा राष्ट्रीय चेतना :-

राष्ट्र के प्रति तीव्र अपनत्व तथा ममत्व की भावना में राष्ट्रीयता का जन्म हुआ। प्रगत और अप्रगत राष्ट्रों के इतिहास से देखा जा सकता है कि इस भावना ने अपूर्व कार्य किया है। राष्ट्रीयता एक मानसिक अनुभूति अथवा मन की एक स्थिति है। राष्ट्रीयता के कारण ही जन्मभूमि को स्वर्गदीप गरीयसी मानकर एक भावनात्मक लगाव उसके प्रति रहता है। श्री अरविन्दजी ने राष्ट्रीयता के स्वरूप में कहा है, "राष्ट्रीयता स्वयं परमात्मा से उद्भूत एक धर्म है। .. उसका दमन नहीं हो सका है और न हो सकेगा। राष्ट्रीयता ईश्वर की शक्ति में अमर होकर रहती है और उसका किसी भी शस्त्र से संहार संभव नहीं है। राष्ट्रीयता अमर है, क्योंकि वह मर्त्य मानव की सृष्टि नहीं है।

प्रत्येक राष्ट्र के साथ उसके अपने समाज का एक तादात्म्य संबंध होता है । व्यक्ति का परिवार के लिए, परिवार का समाज के लिए और समाज का राष्ट्र के हितों के लिए बलिदान करना क्रमशः राष्ट्रीयता के ही सोपान हैं। व्यक्ति का स्व से पर की ओर उन्मुख होना ही राष्ट्रीयता का प्रमुख सिध्दान्त है। विश्व बन्धुत्व या विश्व राष्ट्र की कल्पना राष्ट्रीयता की चरम सीमा है। जाति, भाषा, सामान्य स्वार्थ, धर्म और भौगोलिक समीपता राष्ट्रीय भावना को सदृढ बनाने में सहायक होते हैं।

अथवा गौण रूप भौगोलिक एकता, राष्ट्रीय एकता के लिए राजनीति विशारदों ने कतिपय तत्वों की अनिवार्यता सिध्द्ध की है। प्रत्येक तत्व की एक निजी विशेषता है जो मुख्य में राष्ट्रीय तत्व के लिए नितान्त सहायक होती है। ये तत्व हैं। धार्मिक एकता, जातीय एकता, भाषिक एकता, धार्मिक एकता तथा आर्थिक एवं राजनीतिक तत्व | स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि, जन शक्ति, भूमि तथा संस्कृति की रक्षा व उन्नति की भावना राष्ट्रीय भावना कही जायेगी। कभी -कभी इस भावना के अंतर्गत जन, भूमि और संस्कृति तीनों की रक्षा की भावना संयुक्त रूप में उपस्थित हो सकती है।

निष्कर्ष

हिंदी देश की सामासिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व आरम्भ से ही करती रही है। साहित्य और समाज एक दूसरे के पूरक रहे है। 'राष्ट्रवाद' भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण विपेपता है । साहित्यकार के व्यक्तित्व में उस संस्कृति की विशेषताएँ गुंथी हुई होती है। प्रत्येक देश का साहित्य तत्कालीन संस्कृति को प्रभावित कर उसे विकसित करता है। साहित्यकार अपने देश और काल की संस्कृति से प्रभावित होकर अपने ग्रंथ की रचना करता है। अतः साहित्य को संस्कृति की लिखित अभिव्यक्ति माना गया है, जो एक पीढी से दूसरी पीढी को अनायास प्राप्त होती रहती है। साहित्य और संस्कृति दोनों का लक्ष्य जीवन को अधिक सुन्दर और उदात्त बनाना है। जिस देश का साहित्य जितना महान होता है, उस देश की संस्कृति भी उतनी महान होती है। साहित्य संस्कृति की लिखित अभिव्यक्ति है और संस्कृति साहित्य की आन्तरिक अमूर्त प्रेरणा दायिनी शक्ति साहित्य संस्कृति का संवाहक भी है ।

संदर्भ

1. डा० अमरनाथ - हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली - *पृष्ठ* संख्या-30
2. आजकल पत्रिका - जून 2015 पृष्ठ संख्या-15
3. डा० बच्चन सिंह– आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास पृष्ठ संख्या–63
4. गणपति चन्द्र गुप्त-साहित्यिक निबंध– *पृष्ठ* संख्या-590
5. रामधारी सिंह दिनकर - एई महामानवेर, सागर तीरे, हमारा सांस्कृतिक परिवेश पृष्ठ संख्या-34
6. सुनीति दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना पु. 3
7. डी– शुभ लक्ष्मी आधुनिक हिंदी काव्य में राष्ट्रीय चेतना पृ. 9
8. डॉ. कर्ण सिंह भारतीय राष्ट्रीयता के अग्रदूत पु. 76
9. आधुनिक हिंदी काव्य में राष्ट्रीय चेतना पृ. 9
10. आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना पृ. 20
11. सुनीति दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना पृ. 4
12. डॉ. कर्ण सिंह भारतीय राष्ट्रीयता के अग्रदूत पृ. 83
13. सुनीति दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना पृ. 6
14. आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना पृ. 37
15. सुनीति दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः ।" पृ. 40

16. दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना पू. 11